# खरीफ पी.ओ.पी.

**25** डिसमिल जमीन के लिए

- भारत में मूँगफली मुख्यतः तिलहन फसल के रूप में किया जाता है, तथा इसकी फलियां ग्रामीण झारखंड में सीधे खाने में भी इस्तेमाल किया जाता है।
- मूँगफली झारखंड के टांड़ जमीन में बरसात के मौसम में किया जाने वाला एक नगदी फसल है।

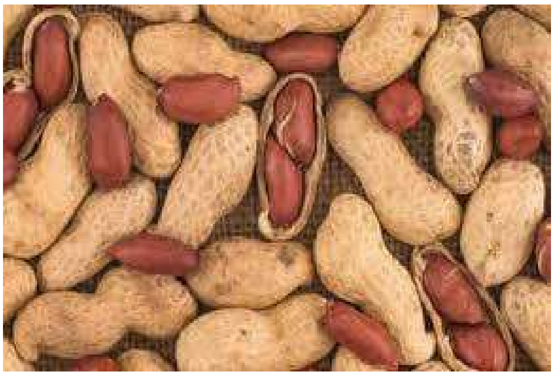

खेती करने का उचित समय:

झारखंड में मूँगफली के बुआई का उचित समय 15 जून से 10 जुलाई तक है। प्रायः मानसून की पहली बारिश में इसकी बुआई करना अच्छी मानी जाती है |

जमीन का चुनाव:

- मूंगफली के लिए झारखंड की टांड़-1 जमीन एवं बाड़ी जमीन सबसे उपयुक्त माना जाता है |
- रेतीली दोमट मिट्टी मूंगफली के खेती के लिए उपयुक्त होती है।
- जल निकासी की उचित व्यवस्था वाली जमीन में ही मूँगफली की खेती करनी चाहिए।

मूंगफली की फसल का उत्पादन हेतु महत्वपूर्ण कदम:

- बीज़ का चुनाव
  - अच्छी उपज के लिए मूँगफली की उन्नत बीज़ का चुनाव करना चाहिए और हर तीसरे वर्ष में बीज को बदल देना चाहिए | यह बदलाव दूसरे किसान के साथ अदल-बदल कर किया जा सकता है |
  - पुष्ट और समान आकार (एकरूपता) वाले बीज़ का चुनाव करना चाहिए |
- बीज़ की छँटाई, उपचार करना

- o अच्छे बीज़ की छँटाई हाथ से चुन कर करना और एक आकार वाले बीज़ का ही उपयोग उचित है |
- o बीज़ जनित बीमारियों से बचाव के लिए बीज़ का उपचार अति आवश्यक है | मूँगफली के बीज़ का उपचार के लिए बीजामृत का 5 मिली प्रति लीटर पानी में मिला कर उपयोग किया जा सकता है |
- o पौधों की सुरक्षा हेतु बीजों को ट्राईकोडरमा विरडी (Trichoderma Viride) के कल्चर का लेप लगाना चाहिए | इसके लिए, 1 लीटर पानी में 100 ग्राम गुड़ को मिलाकर घोल बनाकर उबालते ( 20 मिनट तक) हैं, तथा पूरी तरह ठंडा होने के बाद 5 ग्राम ट्राईकोडरमा विरडी और 50 ग्राम PSB तथा 50 ग्राम राइजोबियम को मिलाकर कल्चर घोल बनाते हैं | उसके बाद तैयार घोल को एक किलो बीज के साथ अच्छी तरह मिलाकर (सभी बीजों पर इसका लेप लग जाए) छाया में सुखाते हैं | उसके बाद ही बीज़ की बुआई की जाती है |

मूँगफली की उन्नत किस्म:

| किस्म | अवधी (दिनों में) | अनुमानित उपज (मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर) |
|---|---|---|
| AK-12-24 | 100 से 105 | 1.6 से 2.0 |
| बिरसा मूँगफली-2 | 95 से 100 | 1.3 से 1.5 |
| धरणी | 100 से 105 | 2.0 से 2.5 |
| K- 6 | 105 से 110 | 3.25 से 3.5 |

मूंगफली की खेत की तैयारी:

- झारखंड की मिट्टी की अम्लीयता को कम करने के लिए बीज़ रोपाई से 25 दिन पहले खेत की पहली जुताई के समय चुने का प्रयोग करना चाहिए (125 किलो प्रति 25 डिसमिल )|
- खेत की 3 से 4 बार जुताई कर मिट्टी को अच्छी तरह से भुरभुरा बना लेना चाहिए क्योंकि मूँगफली की फलियाँ हल्की एवं भुरभुरी मिट्टी में ज्यादा उपज देती है |
- पानी निकासी के लिए गहरा नाला बनाना चाहिए जिससे खेत से पानी निकासी तुरंत संभव हो |
- गोबर खाद 1000 किलो प्रति 25 डिसमिल जमीन के लिए अंतिम जुताई के समय उपयोग करना चाहिए |

मूँगफली लगाने की विधि एवं बीज़ दर

- गुच्छे वाले किस्म — कतार से कतार 45 सें. मी. (एक हाथ) एवं पौधा से पौधा 10 से. मी. (4 अंगुल) दूरी में लगाना चाहिए।
- फैलने वाले किस्म - कतार से कतार 45 से.मी. (एक हाथ) एवं पौधा से पौधा 15 से. मी. (6 अंगुल) दूरी में लगाना चाहिए।
- गुच्छे वाले पौधा के किस्म के लिए - 7 से 8 कि.ग्रा. प्रति 25 डिसमिल बीज़ की आवश्यकता होती है |
- फैलने वाले पौधा के किस्म के लिए - 6 से 7 कि.ग्रा. प्रति 25 डिसमिल बीज़ की आवश्यकता होती है |

फोटो : मूँगफली के लिए खेत की जुताई

फोटो : मार्कर द्वारा लाइन बनाना और बीज़ को सुनिश्चित दूरी पर लगाना

खाद/उर्वरक का प्रयोग:

अरहर की अच्छी फसल के लिए गोबर खाद के अतिरिक्त 50 kg घनजीवामृत को अंततम जुताई से पहि खेत में समान रूप से डाल देना चाहिए ।

निकाई – गुड़ाई :

- बुआई के 20-25 दिनों के बाद फसल की पहली निकाई-गुड़ाई कर मिट्टी चढ़ाना चाहिए (फैलने वाली किस्म लगाने पर उसके फैलाव वाले ताने को भी मिट्टी से ढँक देना चाहिए) और दूसरी निकाई-गुड़ाई आवश्यकतानुसार करनी चाहिए।
- सावधानी :- 30 दिनों के बाद निकाई गुड़ाई करने से फलियों को नुकसान होने की संभावना होती है अतः पहली निकाई-गुड़ाई समय पर ही करना चाहिए |

फोटो : निकाई-गुड़ाई

**रोग प्रबंधन:**

<table>
<tr><th></th><th></th><th></th></tr>
<tr><td>टिक्का रोग<br> </td><td>• यह बीमारी फफूंद के कारण होता है।<br>• इस बीमारी में गोलाकार कत्थई रंग का गहरा धब्बा पत्तियों एवं तने में दिखाई देती है । बीमारी ज्यादा होने से पौधा का सब पत्ता गिर जाता है एवं सिर्फ तना बच जाता है।</td><td rowspan="2">• बीज का उपचार करने से भी इस रोग को नियंत्रित रखा जा सकता है|<br>• मठास्त्र 1 लीटर प्रति 20 लीटर पानी में मिलाकर 10 दिन अंतराल में छिडकाव करना है |<br>• अगले वर्ष मूंगफली की फसल को इस बीमारी से बचाने के लिए मूंगफली की फसल अवशेषों को एकत्र करके जल्द से जल्द जला देना चाहिए।<br>• इस रोग से बचाव के लिए खेत की ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई करनी भी लाभदायक होती है।</td></tr>
<tr><td>जड़ का सड़न रोग (Root Rot)<br> </td><td>• इस रोग के प्रभाव से मिट्टी से सटे पौधे के तने का भाग सूखने लगता है, जड़ों के पास मकड़ी की जालें जैसी सफ़ेद रचना</td></tr>
</table>

| | | |
|---|---|---|
| | दिखाई पड़ती है, पौधे पीले पड़ने लगते हैं, प्रभावित फयों में दाने सिकुडे हुए या पूरी तरह से सड़ जाते है। | |

कीट प्रबंधन:

| | | |
|---|---|---|
| भुआ पिल्लू : | यह कीट 40 से 45 दिनों की फसल में आता है। यह कीट पौधो के पत्तो को खाकर जालीदार बना देता है जिससे फसल को भारी नुकसान होता है। | अग्नेअस्त्र या ब्रम्हास्त्र या हांडीकाथ का छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर 25 मिली प्रति लीटर पानी में मिला कर 2 बार छिड़काव करना चाहिए। |
| तना-छेदक | तना छेदक किट तने में छेद कर देता है जिससे मूंगफली की फलियों में दाने नहीं भरती हैं। | अग्नेअस्त्र या ब्रम्हास्त्र या हांडीकाथ का छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर 25 मिली प्रति लीटर पानी में मिला कर 2 बार छिड़काव करना चाहिए। |

| | | |
|---|---|---|
| दीमक का प्रकोप | जमीन में नमी की कमी होने से दीमक का प्रकोप शुरू होता है जो फसल को बहुत नुकसान पहुंचा सकता है। | निकाई गुड़ाई कर मिट्टी नहीं चढ़ाने से भी दीमक का प्रकोप होता है | |

सिचाई प्रबंधन:

मूंगफली खरीफ के समय झारखंड में होती है इसलिए सिचाई की आवश्यकता नहीं होती है |

औसत उपज:

औसत उपज (झारखंड) – 1.05 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर।

औसत उपज (इंडिया) - 1.32 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर।

संभावित उपज –

| किस्म | अनुमानित उपज (किलो प्रति 25 डिसमिल) |
|---|---|
| धरणी | 225 |
| K- 6 | 325 |

विशेष बातें

- अप्रैल से मई महीने में खेत की गरमा जुताई 6 इंच गहराई तक करनी चाहिए |
- खेत को जुताई एक बार उत्तर से दक्षिण और दूसरी बार पूर्व से पश्चिम दिशा में करनी चाहिए | इससे मिट्टी जनित बीमारियों का प्रकोप की संभावना घटती है | इससे मिट्टी हल्की होती है और वर्षा का पानी जमीन में ज्यादा रिसता है |